रामायण का आदिकाव्यत्व / आदिकाव्य रामायण

वाल्मीकि 'आदिकवि' तथा रामायण 'आदिकाव्य' के रूप में भारत की साहित्यिक परम्परा में मान्य हैं। ~~मा~~ विषाद से भावविह्वल होकर वाल्मीकि ~~के~~ द्वारा लौकिक संस्कृत का प्रथम पद्य अभिव्यक्त हुआ था —

"मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ॥" (1/2/15) (वाल्मीकिरामायण)

भाव है— हे निषाद! तुम अनंत वर्षों तक प्रतिष्ठा प्राप्त न कर सको। ~~क्यं~~ कारण कि तुमने क्रौंच पक्षियों के जोड़े में से कामभावना से ग्रस्त एक का वध कर दिया है।

इस अद्भुत स्वतः निसृत पद्य पर ~~स्वयं~~ महर्षि वाल्मीकि विस्मित थे। तत्पश्चात् ब्रह्मा ने अभिव्यक्त होकर उनको (वाल्मीकि को) प्रतिपादित किया।

"ऋषे प्रबुद्धोऽसि वागात्मनि ब्रह्मणि, तद् ब्रूहि रामचरितम्।
अव्याहतज्योतिः आर्षं ते प्रतिभाचक्षुः। आद्यः कविरसि।"

(उत्तररामचरित 2/5 के बाद आत्रेयी का कथन)

इसप्रकार महर्षिवाल्मीकि आदिकवि के रूप में शब्दब्रह्म द्वारा प्रतिष्ठित होचुके थे। मुनि वाल्मीकि ने शब्दब्रह्म की अभिव्यक्ति के रूप में रामायण महाकाव्य की रचना की।

~~मह~~ महर्षिवाल्मीकि के मन में कामना थी कि ऐसी काव्य रचना का प्रतिपादन करें जो लोकजीवन से युक्त हो, चतुर्वर्ग की प्राप्ति में फलीभूत हो, भाव-भाषा-छन्द शैली अलङ्कार की दृष्टि से नूतन सर्जना हो, लोकरञ्जन तथा परलोक दोनों की प्राप्ति में सहायक हो तथा अंततः अमरता का जीवन हमें प्रदान करने में सक्षम हो।" — (डा० कपिलदेव द्विवेदी - संस्कृत साहित्य का समीक्षा० इतिहास पृ० 111)

इस ~~हेतु~~ उद्देश्य के लिए वे नायक की प्राप्ति के लिए प्रयासरत थे। नारद से उन्होंने कहा — "महर्षे त्वं समर्थोऽसि ज्ञातुमेवंविधं नरम्।" (1/1/5 - रामायण)

अंततः नायक के रूप में सर्वश्रेष्ठ मानव ~~के रूप~~ श्रीराम का निर्धारण होते ही वाल्मीकि की पद्यधारा प्रवाहित होने लगी। इनका पद्य एक-एक वर्ण पर एक-एक सहस्र श्लोकों को अर्पित करती हुई 'चतुर्विंशति-साहस्री' संहिता के रूप में परिलक्षित हुई।

क्षेमेन्द्र ने रामायणमञ्जरी में महर्षि वाल्मीकि को प्रथम तथा सर्वोपजीव्य कवि के रूप में समुचित आदर प्रदान किया है।

"स वः पुनातु वाल्मीकिः सूक्तामृतमहोदधिः।
ओङ्कार इव वर्णानां कवीनां प्रथमो मुनिः॥"

रामायण का महत्व सांस्कृतिक, धार्मिक तथा ऐतिहासिक दृष्टि से है। किन्तु साहित्यिक दृष्टिकोण से रामायण का महत्व सर्वोच्च स्थान को धारण करता है। रामायण की कथा को अनंत समय तक प्रचलित रहने की बात का निर्दर्शन इस महाकाव्य में है।

"यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति॥" (रामायण 1/2/37) वाल्मीकि-

रामायण की कथा का अनुसरण दो रूपों में किया गया है—(1) सकल रामायण विविध भाषाओं में संदर्भों के अनुरूप सृजित हुई है। ~~(2)~~ यथा— तमिल में कम्ब रामायण, तेलुगु में रङ्गनाथ रामायण, बंगला में कृत्तिवास रामायण, अवधी (हिन्दी) में रामचरितमानस (तुलसीदास-कृत) आदि।

(2) रामायण के मुख्य अंशों को आधार बनाकर काव्य, नाटक, चम्पूकाव्य आदि का रूप प्रदान किया गया है। यथा— भट्टिकृत रावणवध (भट्टिकाव्य), क्षेमेन्द्र कृत रामायणमञ्जरी आदि मुख्य हैं। कालिदासकृत रघुवंश के कुछ सर्गों में रामकथा के रसयुक्त संदर्भों का निरूपण किया गया है। भास के दो रूपक (प्रतिमा तथा अभिषेक) तथा भवभूति के दो रूपक (महावीरचरित तथा उत्तररामचरित) रामकथा के विविध संदर्भों पर आधारित हैं।

वस्तुतः रामायण का आदिकाव्यत्व इसकी भाषा तथा शैली के परवर्ती संस्कृत साहित्य में व्यापक रूप से अङ्गीकरण के कारण है। इसीकारण भोजराज ने कहा था कि माधुर्य से युक्त कथनों का मार्ग आदिकवि ने प्रशस्तकर सकल कवि समूह को आलोकित किया है "मधुमयभणितीनां मार्गदर्शी महर्षिः।"

महर्षि वाल्मीकि ने नूतन अभिव्यक्ति शैली का प्रतिपादन किया। इसमें वक्रोक्ति थी जो जनसामान्य के हृदय को आकर्षित करती थी। इस भाषानिरूपण में तथ्यों के नैसर्गिक वर्णन के साथ-साथ कल्पनातत्व, सौन्दर्य, कला आदि की अभिव्यक्ति का समुचित अवसर था।

महर्षि वाल्मीकि के वर्षावर्णन में भाव तथा भाषा - दोनों का प्रकाश प्राप्त होता है।

"क्वचित्प्रकाशं क्वचिदप्रकाशं नभः प्रकीर्णाम्बुधरं विभाति।
क्वचित्क्वचित्पर्वतसन्निरुद्धं रूपं यथा शान्तमहार्णवस्य॥"

ऋग्वेद का पर्जन्यसूक्त वह प्रभाव तथा चमत्कार नहीं उत्पन्न कर पाता जो महर्षि वाल्मीकि की नूतन शैली करती है। पुरातन शैली स्वाभावोक्ति में विषयविन्यास का यथार्थ रूप से प्रतिपादन होता था। किन्तु महाकवि की नूतन अभिव्यक्ति शैली सर्वश्रेष्ठ है जिसका अनुसरण परवर्ती संस्कृत कवि करते हैं।

इस प्रकार रामायण के आदिकाव्यत्व की विविध दृष्टियाँ हैं। महर्षि वाल्मीकि ने रामकथा का प्रतिपादन, महाकाव्य में नायक का अङ्गीकरण, भावपूर्ण निरूपण, कथानक के अनुरूप वर्णनों का निरूपण, अलङ्कारों का प्रयोजनपूर्ण समागम तथा भाषा में नादगत सौन्दर्य के आगम का शंखनाद किया। परवर्ती कवियों ने इसका अनुसरण किया।